Dr.Uttam Kumar

S.R.A.P College,Barachakia
Mob.No.8210561032

Session -2023-27

Faculty - Commerce

Class-Second Semester

Subject -Business Organisation

जीवन-स्तर में भी वृद्धि होती है।"

व्यवसाय के आवश्यक तत्व अथवा विशेषताएँ अथवा लक्षण
(ESSENTIALS OR CHARACTERISTICS OF BUSINESS)

(1) **मानवीय क्रियाएँ** (Human Activities)—व्यवसाय का सबसे प्रमुख लक्षण इसमें मानवीय क्रियाओं के तत्व का निहित होना है। व्यवसाय केवल मानव द्वारा ही किया जाता है, न कि पशु-पक्षियों या जानवरों द्वारा। यही नहीं, यह मानव भी केवल आर्थिक मानव ही होना चाहिए, न कि अनार्थिक मानव; जैसे—साधु तथा संन्यासी।

(2) **साहस** (Enterprise)—प्रत्येक प्रकार के व्यवसाय में साहस का तत्व अवश्य होता है, क्योंकि साहसी व्यक्ति ही जोखिम उठाने की क्षमता रखते हैं। व्यवसाय साहस की आधारशिला पर ही आधारित है। किसी ने ठीक ही कहा है, **'साहस नहीं तो व्यवसाय नहीं'**। एक साहसी किसी भी व्यवसाय की स्थापना करने से पूर्व उसके व्यावहारिक पहलू पर गम्भीरता से विचार करता है और उसके पश्चात् ही उसकी स्थापना का निर्णय करता है।

(3) **जोखिम एवं भावी सफलता** (Risk and Future Success)—आप किसी भी व्यवसाय को क्यों न लें, उसमें जोखिम तत्व अवश्य होता है। इस सम्बन्ध में एक कहावत भी है—"व्यवसाय जोखिम का खेल है"। हाँ, इतना अवश्य है कि कुछ व्यवसायों में जोखिम अधिक होता है और कुछ में कम। किन्तु सभी व्यवसायों में कुछ न कुछ जोखिम अवश्य ही होता है, क्योंकि 'लाभ जोखिम का प्रतिफल है'। जिन व्यावसायिक क्रियाओं में जोखिम नहीं होता उन्हें व्यवसाय की श्रेणी में सम्मिलित नहीं किया जा सकता है। अब यह प्रश्न उठता है कि आखिर व्यवसायी जोखिम लेने को क्यों तत्पर हो जाता है? प्रत्युत्तर में कहा जा सकता है कि एक व्यवसायी लाभ कमाने एवं भावी सफलता (लाभ) की आशा में जोखिम लेने के लिए सहर्ष तैयार हो जाता है। यदि व्यवसाय से सफलता (लाभ) के तत्व को पृथक् कर दिया जाए तो शायद ही कोई व्यवसायी जोखिम लेने के लिए तैयार होगा।

(4) **विनिमय द्वारा लाभ** (Profit through Exchange)—समस्त व्यवसायों का चतुर्थ प्राथमिक लक्षण सम्बन्धित पक्षकारों के पारस्परिक लाभ के लिए वस्तुओं एवं सेवाओं के विनिमय द्वारा लाभ कमाना है। यदि वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन एवं वितरण लाभ के लिए नहीं किया जाता तो उसे व्यवसाय नहीं कह सकते हैं। यही नहीं, यदि वस्तुओं एवं सेवाओं का विनिमय लाभ के लिए नहीं अपितु उपयोग के लिए किया जाए तो भी वह व्यवसाय नहीं कहलायेगा। इसका आशय यह कदापि नहीं कि यदि किसी कारणवश किसी विनिमय की क्रिया में लाभ की अपेक्षा हानि हो तो उसे व्यवसाय नहीं कहेंगे, किन्तु इतना अवश्य है कि प्रत्येक विनिमय रूपी व्यावसायिक क्रिया का उद्देश्य लाभ कमाना अवश्य होना चाहिए। फिर भी यदि हानि हो जाए तो दूसरी बात है। प्रत्येक व्यवसायी जहाँ एक ओर तो अधिकतम लाभ कमाने का प्रयत्न करता है, वहाँ वह दूसरी ओर उत्पादन की लागत तथा व्ययों में कमी करने का भी प्रयत्न करता है। ये दोनों क्रियाएँ ही सफलता की कुँजी हैं।

(5) **लेन-देन में नियमितता** (Regularity of Dealings)—वस्तुओं और सेवाओं के उसी विनिमय को व्यवसाय की संज्ञा दी जा सकती है जो नियमित रूप में अर्थात् निरन्तर होता रहता है। किसी एकाकी लेन-देन को व्यवसाय नहीं कहा जा सकता। उदाहरण के लिए, यदि कॉलेज का कोई छात्र अपनी पुरानी साइकिल बेच दे तो यह व्यवसाय नहीं कहलायेगा चाहे

---

1 "Business is an institution organised and operated to provide goods and services to society under the incentive of private gain."
—Bayard O' Wheeler : *Business—An Introductory Analysis*

उसे लाभ ही क्यों न हुआ हो। किन्तु यदि व्यक्ति पुरानी साइकिलों को बेचने का धन्धा अपना ले, अर्थात् इस कार्य को नियमित रूप से करना शुरू कर दे तो वह व्यवसाय कहलायेगा।

(6) **वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन अथवा वितरण** (Production or Distribution of Goods and Services)—व्यवसाय का छठा महत्वपूर्ण तत्व अथवा लक्षण वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन या वितरण का होना है। जिन मानवीय क्रियाओं द्वारा वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन या वितरण नहीं होता है उन्हें व्यवसाय के अन्तर्गत सम्मिलित नहीं किया जा सकता है। इस सम्बन्ध में यह भी उल्लेखनीय है कि मानवीय क्रियाओं द्वारा जिन वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन एवं वितरण किया जाए, वे सभी मूल्य वाली होनी चाहिए, निःशुल्क नहीं। साथ ही उनका प्रतिफल भी मुद्रा में होना चाहिए। प्रतिफल रहित क्रियाओं को व्यावसायिक क्रियाओं में सम्मिलित नहीं किया जाता है।

(7) **वैधानिकता** (Legality)—व्यवसाय की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि व्यवसाय के अन्तर्गत की जाने वाली मानवीय क्रिया सम्बन्धित देश के प्रचलित विधान के अनुसार वैधानिक होनी चाहिए। यदि अवैधानिक तरीकों से वस्तुओं का उत्पादन, क्रय-विक्रय तथा विनिमय किया जाए तो उसे व्यवसाय की श्रेणी में सम्मिलित नहीं किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, तस्करी तथा बिना वैध लाइसेन्स के दवाइयों तथा शराब आदि का विक्रय करना व्यवसाय नहीं कहलायेगा। अतः प्रत्येक व्यवसायी को व्यावसायिक क्रियाओं का निष्पादन करते समय अपने देश के व्यावसायिक कानूनों (वस्तु विक्रय अधिनियम, अनुबन्ध अधिनियम, आयकर अधिनियम, श्रम अधिनियम, मुद्रांक अधिनियम) का पूर्णतः पालन करना चाहिए।

(8) **पारस्परिक लाभ एवं सन्तुष्टि** (Mutual Benefit and Satisfaction)—आधुनिक विशेषज्ञ इस बात पर बल देते है कि व्यवसाय केवल लाभ के लिए ही नहीं होता अपितु व्यावसायिक क्रियाओं में ग्राहक तथा व्यवसायी दोनों का ही पारस्परिक हित होता है। इस प्रकार व्यवसाय का एक तत्व यह भी है कि उसकी क्रियाओं द्वारा दोनों पक्षकारों को पारस्परिक लाभ एवं सन्तुष्टि प्राप्त होती रहे, तभी उसे व्यवसाय कहेंगे अन्यथा नहीं।

(9) **समाज की आवश्यकताओं की सन्तुष्टि** (Satisfaction of Social Needs)—व्यवसाय केवल किसी व्यक्ति विशेष की आवश्यकताओं की ही सन्तुष्टि नहीं करता है, अपितु इसके द्वारा पूरे समाज की आवश्यकताओं की सन्तुष्टि होती है। इसी कारण यह कहा जाता है कि व्यवसाय का एक महत्वपूर्ण लक्षण व्यवसाय का एक सामाजिक क्रिया होना है। व्यवसाय एकान्त जंगल में नहीं किया जा सकता, अपितु समाज में रहकर समाज के लोगों के साथ किया जाता है। व्यवसाय का एक महत्वपूर्ण तत्व यह भी है कि इसकी समस्त क्रियाएँ पूरे समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए संचालित की जाती है।

(10) **लाभ की भावी अनिश्चितता** (Future Uncertainty of Profits)—व्यावसायिक क्रियाएँ लाभ कमाने के उद्देश्य से की जाती हैं। किन्तु यह लाभ केवल व्यवसायी तथा उसके साथियों के प्रयत्नों पर निर्भर नहीं होता, अपितु इसके निर्धारण में कुछ ऐसे तत्व भी होते है जिन पर उनका कोई वश नहीं होता। ये तत्व है व्यवसाय के लाभों की अनिश्चितताएँ। इनमें व्यावसायिक स्थितियों में परिवर्तन (जैसे—तेजी-मन्दी), सरकार की नीतियों में अकस्मात् परिवर्तन (वर्तमान सरकार की नवीन आर्थिक नीतियाँ), वस्तुओं तथा सेवाओं की माँग में परिवर्तन एवं फैशन में परिवर्तन आदि तत्व सम्मिलित है।

(11) **उपयोगिताओं का सृजन** (Creation of Utilities)—एक व्यवसायी वस्तुओं की उपयोगिता का सृजन करता है। इसमें व्यवसायी, उपभोक्ताओं तथा राष्ट्र सभी को लाभ होता है। यह उपयोगिता कई प्रकार की हो सकती है; जैसे—स्थान उपयोगिता, रूपउपयोगिता, समय उपयोगिता आदि। यदि उपयोगिता का सृजन नहीं, तो व्यवसाय नहीं।

(12) **विनिमय, विक्रय तथा हस्तान्तरण** (Exchange, Sale and Transfer)—समस्त व्यवसायों का एक अन्य सामान्य प्राथमिक लक्षण विनिमय, विक्रय तथा हस्तान्तरण का होना है। वास्तव में, व्यवसाय कहलाने के लिए विनिमय, विक्रय तथा हस्तान्तरण का होना परम आवश्यक है। उदाहरण के लिए, यदि वस्तुओं का उत्पादन अथवा निर्माण स्वयं अपने ही उपभोग अथवा उपयोग के लिए किया जाए, तो यह व्यावसायिक क्रिया नहीं कहलायेगी।

(13) **व्यवसाय कला और विज्ञान दोनों है** (Business is an Art and Science both)—व्यवसाय में कला तथा विज्ञान दोनों के लक्षण विद्यमान हैं। व्यवसाय एक कला है, क्योंकि कलाकार के समान इसमें व्यक्तिगत योग्यता, निपुणता अनुभव एवं समझ की आवश्यकता पड़ती है। इसी प्रकार व्यवसाय एक विज्ञान भी है, क्योंकि विज्ञान की भाँति व्यवसाय के भी कुछ निश्चित सिद्धान्त एवं उद्देश्य होते है जिनके अनुसार व्यवसाय किया जाता है।

(14) **उपभोक्ता सन्तुष्टि** (Consumer Satisfaction)—व्यवसाय का एक अन्य महत्वपूर्ण लक्षण उपभोक्ता की सन्तु है क्योंकि इसी पर समूचे व्यवसाय का अस्तित्व एवं विकास निर्भर करता है। इस सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि 'ग्रा राजा है' (customer is the king), 'ग्राहक सदैव सही है' (customer is always correct) आदि। यही कारण है आधुनिक व्यवसायी ग्राहक सन्तुष्टि को सर्वोत्तम प्राथमिकता देता है।

(15) **आर्थिक क्रिया** (Economic Activity)—यह निर्विवाद सत्य है कि व्यवसाय एक आर्थिक क्रिया है। आर्थिक क्रियाओं से आशय उन क्रियाओं से है जोकि लाभ कमाने तथा उसके उपयोग से सम्बन्धित होती है। व्यवसाय में केवल आर्थिक क्रियाओं को ही सम्मिलित किया जाता है, अनार्थिक क्रियाओं को नहीं। यहाँ पर स्पष्ट करना अनावश्यक नहीं होगा कि समस्त व्यावसायिक क्रियाएँ तो आर्थिक क्रियाएँ होती ही हैं किन्तु समस्त आर्थिक क्रियाएँ व्यावसायिक क्रियाएँ नहीं होती। इसका कारण यह है कि आर्थिक क्रियाओं में उपभोग, उत्पादन, वितरण एवं विनिमय आदि से सम्बन्धित सभी क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है, जबकि व्यावसायिक क्रियाओं में केवल उत्पादन, वितरण एवं विनिमय सम्बन्धी क्रियाओं को ही सम्मिलित किया जाता है।

(16) **व्यापक क्षेत्र** (Wide Scope)—व्यवसाय का एक अन्य महत्वपूर्ण लक्षण इसका व्यापक क्षेत्र होना है। व्यवसाय में वस्तुओं के उत्पादन से लेकर अन्तिम उपभोक्ता तक उसे पहुँचाने तक की समस्त क्रियाएँ सम्मिलित की जाती है। यही कारण है कि इसमें व्यापार, वाणिज्य तथा उद्योग आदि सभी को सम्मिलित करते हैं। **एल. एच. हैने** के अनुसार, "एक ओर तो व्यवसाय व्यापार एवं निर्माण सम्बन्धी प्रक्रियाओं पर निर्भर करता है तो दूसरी ओर वह बाजार को देखता है। इस संगम पर खड़ा होकर व्यवसायी या तो तकनीकी प्रक्रिया का निर्देशन करता है अथवा बाजार का मूल्यांकन करता है अथवा दोनों क्रियाओं का निष्पादन करता है, परन्तु वह लाभ कमाने के लिए सदैव क्रय-विक्रय में सक्रिय रहता है।"

(17) **सामाजिक परिवर्तन का साधन** (An Instrument of Social Change)—विश्वविख्यात प्रबन्ध विद्वान **श्री पीटर एफ. ड्रकर** के अनुसार, "**व्यवसाय सामाजिक परिवर्तन का साधन है।**" इसका आशय है कि व्यवसाय के माध्यम से सामाजिक जीवन में क्रान्ति लाई जा सकती है। इसके द्वारा सामाजिक जीवन निम्न स्तर से उठाकर उच्चतम स्तर तक ले जाया जा सकता है।